

प्रतिमाओं के साँचे में दलित विमर्श

डॉ. अरविन्द कुमार
डॉ. मुंकेश कुमार शुक्ल



प्रकाशक :

मनीष प्रकाशन

प्लॉट नं०-26, रोहित नगर कालोनी,

बी० एच० यू०, वाराणसी-5

दूरभाष : 0542-2310682

Email : kalaprakashanvns@yahoo.in

© संपादक द्वय द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रस्तुत पुस्तक में दिये गये सभी तथ्य लेखक के हैं, प्रकाशक का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। विवाद की स्थिति में लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा।

डॉ. अरविन्द कुमार

डॉ. मुंकेश कुमार शुक्ल

प्रथम संस्करण : 2016

ISBN : 978-93-85789-04-5

मूल्य : 900.00 रुपये

कम्प्यूटर अक्षर संरचना :

मनीष कम्प्यूटर मीडिया

प्लॉट नं०-26, रोहित नगर कालोनी,

बी० एच० यू०, वाराणसी-5

दूरभाष : 0542-2310682

मुद्रक :

महावीर प्रेस

भेलूपुर, वाराणसी

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	पृष्ठ संख्या
संमर्पण	 iii
भूमिका	 iv-vi
1. चातुर्वर्ण्य समाज की नींव (दलित) का इतिहास चक्र डॉ. मुंकेश कुमार शुक्ल	 9-16
2. हिन्दी दलित कविता की यथार्थ विकास-यात्रा डॉ. अमरजीत राम	 17-30
3. दलित कविता : नयी कविता, अकविता, समकालीन कविता का बिम्बात्मक प्रस्फुटन डॉ. मनीष कुमार	 31-41
4. दलित साहित्य की प्रामाणिकता एवं सार्थकता का प्रश्न डॉ. अरविन्द कुमार	 42-51
5. दलित सौन्दर्यशास्त्र : अंग्रेजी शब्दकोश के डिस्प्रेस्ट क्लास का उत्तर-आधुनिक अर्थबोध डॉ. रविशंकर सोनकर	 52-59
6. प्रतिरोधी चेतना का स्वर है दलित साहित्य डॉ. संजय कुमार सुमन	 60-65
7. लोक संस्कृति, साहित्य और दलित चेतना डॉ. अर्पणा पाण्डेय	 66-77
8. दलित चेतना का स्वर और समकालीन हिन्दी उपन्यास डॉ. वीरेन्द्र कुमार गौतम	 78-86
9. भारतीय साहित्य में दलित महिलाओं की स्थिति डॉ. स्कन्ध जी पाठक	 87-95
10. दलित साहित्य की अवधारणा और प्रेमचंद डॉ. कमल कुमार	 96-100
11. दलित स्त्री आत्मकथाकार : यथार्थ के नए आयाम डॉ. अखिलेश कुमार दुबे	 101-105
12. दलित स्त्री मुक्ति की तलाश करती आत्मकथाएँ डॉ. संगीता यादव	 106-124

दलित साहित्य की प्रामाणिकता एवं सार्थकता का प्रश्न

★डॉ. अरविन्द कुमार

कुछ वर्षों से साहित्य के क्षेत्र में सर्वाधिक चर्चित एवं विवादस्पद साहित्य लिखा जा रहा है। जो दलित साहित्य के नाम से अभिभूत हुआ है। इस दलित साहित्य पर विवाद खूब जोरों से किया जा रहा है। दलित साहित्य क्या है? दलित साहित्य कौन लिख सकता है? दलित साहित्य का असली हकदार कौन है? और उसकी प्रामाणिकता एवं सार्थकता पर सवाल उठाये जा रहे हैं। यह विवाद शुरू में उसकी जरूरत, तथा उसकी भाषा और शिल्प, अब उसकी औचित्य पर स्थिर हो गया है। दलित साहित्य का विषय वस्तु कह सकते बहुत वृहद है। क्योंकि यह साहित्य सभी वर्गों, समुदायों को लेकर मनुष्यता को केन्द्रित करता है। यह मनुष्य का साहित्य है। भारतीय समाज में यह तत्कालीन युग का सर्वाधिक ज्वलंत सवाल है। दलित साहित्यकारों और मार्क्सवादियों की विचारधारा लगभग एक ही है। मार्क्स के बाद सर्वाधिक विवादित साहित्य दलित साहित्य है। जिसको अभिजात्य वर्ग का साहित्य स्वीकार नहीं कर पा रहा है। अभिजात्य वर्ग का जो साहित्य है, उसका प्रतिमान दलित साहित्य से भिन्न है। दलित साहित्यकार अपने प्रतिमान स्वयं गढ़ रहे हैं। जिसमें उनके जीवन की अनुभूति की अभिव्यक्ति का यथार्थ है। दलित साहित्यकार अपने भाषा, शिल्प, कथ्य और संवेदना के स्तर पर साहित्य लिख रहे हैं। इसलिए उनके साहित्य पर अश्लीलता का आरोप लग रहा है। जिसको आज अश्लील कहा जा रहा है। वह दलित जीवन की हकीकत है यथार्थ है, जो उनको विरासत में मिला है। ओमप्रकाश वाल्मीकि के शब्दों में “सवर्ण आलोचकों को दलित लेखन में कलात्मक अभिव्यक्ति की कमी दिखाई

★ असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
सागर, मध्य प्रदेश 470003